ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 2, February 2022

पुराण साहित्य का सामान्य परिचय

कृष्णेन्द्र पाण्डेय, डॉ. बी.एन. ओझा

शासकीय टी. आर. एस. महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

शोध–सारांशः पुराण, अर्थात् जो पुराना हो। पुराने व्यक्ति का अनुभव विलक्षण होता है और उसके द्वारा रचे गए काव्य या ग्रंथ में उसी के विचार और जीवन व्यतीत किए गए तजुर्बे होते हैं। जीवन में किस तरह उतार–चढ़ाव आते हैं और उनसे कैसे संघर्ष करना है यह सब उस व्यक्ति को पता होता है। जिस व्यक्ति को इतिहास और पुराणों की जानकारी नहीं होती, उससे वेद भी भयभीत होते हैं। कारण यह कि ऐसा व्यक्ति बिना सोचे समझे कार्य करता है और कहीं किसी को भी आहत कर सकता है। अतः हर व्यक्ति को पुराणों का ज्ञान होना चाहिए इतिहास एवं पुराण का आश्रय लेकर ही वेदों का अर्थ विस्तार किया जा सकता है। इसकी सहायता के बिना किसी भी ग्रंथ को व्यापक फलक प्रदान नहीं किया जा सकता, और न ही जन मानस के बीच उसका अभ्युदय ही हो सकता।

''इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपवृंहयेत्।
विभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।''[1]

इसी श्लोक को आचार्य बलदेव उपाध्याय जी ने संस्कृत साहित्य के इतिहास में उल्लेखित किया है। उन्होंने पुराण को वेद का 'उपबृंहण' स्वीकारा है। यह शब्द ऊपर लिखे हुए उद्धरण में स्पष्ट रूप से अंकित है। इस तरह पुराण, वेद के समानांतर हो जाते हैं। इनका आपस में बहुत गहरा संबंध है। यहां यह कहा जा सकता है कि एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि किसी तरह संभव भी हो तो आधा–अधूरा पन लगेगा। जिससे पाठक पूर्णरूपेण अर्थ से अनभिज्ञ रहेगा। वह किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाएगा। अतः वेदों के अध्ययन के साथ पुराणों को भी पढ़ना अनिवार्य है। पुराण को पढ़े बिना कोई व्यक्ति विद्वान एवं मनीषी नहीं बन सकता। पुराण का अध्ययन करना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि ''वेद की भाषा है प्राचीन तथा दुरूह, वेद की शैली है रूपकमयी एवं प्रतीकात्मक। इसके ठीक विपरीत पुराण की भाषा है व्यावहारिक एवं सरल और शैली है रोचक तथा आख्यानमयी। इसीलिए जनता के हृदय तक धर्म के तत्व को सुबोध भाषा के द्वारा पहुंचा देने में पुराण का प्रतिस्पर्धा कोई साहित्य नहीं है।''[2]

पुराण की भाषा सरल होने के कारण वह जनमानस में लोकप्रिय है। उसके उपदेश, कथा, उदाहरण आदि लोक जीवन से जुड़े होने के कारण मानव का उसकी ओर झुकाव होना स्वाभाविक है।

''वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।
वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणे नात्र संशयः।।''[3]

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 2, February 2022

उपर्युक्त श्लोक नारदीय पुराण का है। इसका अर्थ है कि सामान्य जन को वेदों के मंत्र और स्मृतियों के श्लोक उतने आकृष्ट नहीं करते जितना पुराण की कथा। कहानियों, कथाओं में सरसता, रोचकता, प्रवाहकता, भक्ति–भावना आदि का संयोग लोकमानस को प्रभावित करता है। वे उसका स्पर्श किए बिना नहीं रह सकते। विद्वान भी उसी को कहा जाता है जो अपनी आख्यायिका एवं शैली से लोगों को अपने वश में कर लेता है। क्लिष्ट शब्दों के प्रति हमारा लगाव नहीं होता।

सामान्य रूप से कही गई बातों की अपेक्षा कहानियाँ या लोक कथाओं द्वारा साधारण भाषा में प्रस्तुत चर्चा के प्रति लोगों का लगाव ज्यादा होता है। हो, भी क्यों न जो चीजें जितना अधिक समझ में आएंगी या मर्म का स्पर्श करेंगी मानव उसी ओर आकर्षित होगा। यह दुनिया का सिद्धांत है। वेदों और निरुक्तों में तो कुछ प्रश्न खुले छोड़ दिए गए हैं लेकिन पुराणों में प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया गया है। जीवन की समस्याओं का समाधान भी पुराण में मिलता है।

"पुराणसंहिताः पुण्याः कथा धर्मार्थसंश्रिताः।
इति वृत्तं नरेन्द्राणामृषीणां च महात्मनाम्।।
द्वैपायनेन यत् प्रोक्तं पुराणं परमर्षिणा।
सुरैर्ब्रह्मर्षिभिश्चैव श्रुत्वा यदभिपूजितम्।।
तस्याख्यानवरिष्ठस्य विचित्रपदपर्वणः।
सूक्ष्मार्थन्याययुक्तस्य वेदार्थैर्भूषितस्य च।।"[4]

पुराणों में धर्म एवं अर्थ के महत्व को उद्घाटित किया गया है। उसमें वर्जित कथा सुनने या पढ़ने से मन की कलुषिता दूर होती है। हृदय पवित्र एवं ऊहा–पोह से मुक्त होता है। इसमें ऋषियों देवताओं और राजाओं का श्रेष्ठ एवं उदार चरित्र है। ये सभी लोग पुराणों की खूब स्तुति करते हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों का विवेचना व्यक्त है। कलियुगी राजाओं का वर्णन महर्षि व्यास ने यथार्थ रूप में किया है।

"ऋृचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।"[5]

चारों वेदों के समान पुराणों की भी उत्पत्ति हुई है। यहां पुराण शब्द से पुरानी वस्तुओं एवं कथाओं के बोध से नहीं है, बल्कि विशिष्ट ज्ञान से है। पुराण ज्ञान, विज्ञान का केन्द्र हैं। उनके सम्पर्क में रहने वाला व्यक्ति शिष्ट, विनम्र, धैर्यवान, वीर एवं धार्मिक होता है। अठारह पुराणों का निर्धारण मिलता है।

"मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापल्लिंग–कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।"[6]

पुराणों की संख्या को लेकर कोई मतभेद दृष्टिगोचर नहीं होता। ये इस प्रकार हैं– मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म, वामन, वराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कूर्म एवं स्कन्ध पुराण। इनमें देवी, देवताओं की आराधना, उपासना, स्तुति के साथ विशेषताओं का भी उल्लेख किया

गया है। इस तरह हम देखते हैं कि पुराण साहित्य वेदों के समतुल्य है। इसकी लोकप्रियता से पता चलता है कि साहित्य में इसका हर काल में विशेष महत्व रहा है। भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक पौराणिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में इन ग्रंथों की उपयोगिता रही है। इनके माध्यम से जन जागरण अभियान भी चलाया जा सकता है। या यूँ कहें जनता को जागरुक करने के लिए इन्हीं ग्रंथों का सहारा लिया गया था, तो भी अतिशयोक्ति न होगा।

पुराणों के स्वाध्याय से शब्दकोष की वृद्धि होती है। मन–मस्तिष्क में स्थिरता आती है। आत्मबल बढ़ने से हर क्षेत्र में व्यक्ति को सफलता मिलती है। संसार के दुःख से दुःखी लोग जब इसकी शरण लेते हैं, तब उनके समस्त शोक संताप दूर हो जाते हैं। वह दिव्य शक्ति की अनुभूति करता है। श्रेष्ठ राजाओं की वंशावली एवं उनके कृत्य हमारे मन को अह्लादित करते हैं।

पुराणों में भगवान के अवतारों का भी दर्शन होता है। अनेक रूप में प्रकट होकर वह अलौकिक पुरुष नाना प्रकार की लीलाओं से हमारे अंतःकरण में प्रवृष्ट होता है। अंश एवं मुख्य अवतारों की संख्या चौबीस है।

''अवतारा ह्यसंख्येया गुणसत्त्वनिधेर्द्विजाः।

यथाऽविदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रसः।।''[7]

भगवान के अद्भुत अलौकिक कर्म को देखकर हम अपनी सुधि–बुधि खो बैठते हैं। वे अपनी लीलाओं के माध्यम से संसार के प्राणियों को सुख देते हैं। दुष्टों का दलनकर सज्जनों की रक्षा करना उनके आने का उद्देश्य है। धर्म की स्थापना के लिए वे अपने शक्ति, शील और सौन्दर्य को जन मानस के समक्ष दिग्दर्शित करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि पुराणों की महिमा अनंत है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

[1]. महाभारत–आदिपर्व,

[2]. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 81

[3]. उद्धृत, संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 81

[4]. महाभारत–आदिपर्व–01/16–18

[5]. अर्थर्वेद–11/07/24

[6]. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 83

[7]. उद्धृत– संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 86